Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. XV, Issue No. 4, June-2018, ISSN 2230-7540

भगत सिंह की क्रांतिकारी राजनीति और गांधीजी के उदारवादी दृष्टिकोण का तुलनात्मक अध्ययन

Dr. Sneha Pandey*

Ph.D. Scholar

सार – ***सभी पीढ़ियों के महापुरुष मनुष्यों के बहुत सुधार के बारे में चिंतित रहे हैं। लेकिन यह कैसे महसूस किया जाए कि यह हर उम्र के लिए एक दुर्गम कार्य है। लक्ष्य समान होने पर भी, लक्ष्य प्राप्त करने के साधन अलग-अलग हो सकते हैं और दृष्टिकोण में यह अंतर बहुत विवाद पैदा कर सकता है। यह ठीक वही है जो आधुनिक भारत के दो महान राजनेताओं महात्मा गांधी और सरदार भगत सिंह के बीच हुआ था। नतीजतन, भगत सिंह को महात्मा गांधी के प्रतिद्वंद्वी के रूप में स्थान दिया गया है। यह कुछ तिमाहियों में आयोजित किया गया है कि जब गांधी राष्ट्रवाद का सूर्य थे, जिसके चारों ओर भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के सभी जन घूमते थे, भगत सिंह एक ऐसे सितारे थे, जिन्होंने स्वयं की कक्षा का पीछा किया।***

शब्द कुंजी – ***भगत सिंह गाँधी जी क्रांतिकारी राजनीति उदारवादी विचारधारा***

----------X----------

प्रस्तावना

भगत सिंह की क्रांतिकारी राजनीति

भगत सिंह एक उत्कृष्ट क्रांतिकारी और भारतीय उपनिवेशवाद विरोधी आंदोलन के थे। उन्होंने उन युवाओं का प्रतिनिधित्व किया जो गांधीवादी राजनीति से असंतुष्ट थे और क्रांतिकारी विकल्पों के लिए तैयार थे। भगत सिंह ने यूरोपीय क्रांतिकारी आंदोलन का अध्ययन किया और अराजकतावाद और साम्यवाद से आकर्षित हुए और वह एक नास्तिक, समाजवादी और साम्यवादी बन गया। उन्होंने महसूस किया कि भारतीय शासन के समाजवादी पुनर्निर्माण के साथ ब्रिटिश शासन को उखाड़ फेंकना चाहिए और इसके लिए राजनीतिक शक्ति कार्यकर्ताओं द्वारा जब्त की जानी चाहिए। भगत सिंह और बी.के. दत्त ने 6 जून, 1929 को असेंबली बम मामले के संबंध में दिए गए एक बयान में क्रांति की अपनी समझ को स्पष्ट किया।

क्रांति से हमारा मतलब है कि चीजों का वर्तमान क्रम, जो कि प्रकट अन्याय पर आधारित है, को बदलना होगा। निर्माता या मजदूर, समाज के सबसे आवश्यक तत्व होने के बावजूद, अपने श्रम के शोषकों द्वारा लूट लिए जाते हैं और अपने प्राथमिक अधिकारों से वंचित हो जाते हैं। किसान जो सभी के लिए मक्का उगाता है, अपने परिवार के साथ भूखा रहता है बुनकर, जो कपड़ा वस्त्रों के साथ विश्व बाजार की आपूर्ति करता है, और अपने बच्चों के शरीर को कवर करने के लिए पर्याप्त कपड़ा नहीं है राजमिस्त्री, स्मिथ और बढ़ई जो शानदार महलों का पालन-पोषण करते हैं, झुग्गियों में रहते हैं।

भगत सिंह व्यक्तिगत आतंकवाद के आलोचक थे जो अपने समय के क्रांतिकारी युवाओं में प्रचलित थे और उन्हें कम्युनिस्ट पार्टी द्वारा बड़े पैमाने पर जुटने की आवश्यकता का एहसास हुआ। अपने अंतिम लेखन में उन्होंने तर्क दिया कि पार्टी को श्रमिकों और किसानों को संगठित करना था। श्रमिक संघों के माध्यम से छोटी आर्थिक मांगों के इर्द-गिर्द लड़ाई राजनीतिक शक्ति को जीतने के लिए जनता को अंतिम संघर्ष के लिए शिक्षित करने का सबसे अच्छा साधन था। इस काम के अलावा कम्युनिस्ट पार्टी के लिए एक सैन्य विभाग को संगठित करना आवश्यक था। उन्होंने कहा मैं आतंकवादी नहीं हूं और मैं अपने क्रांतिकारी करियर की शुरुआत में शायद कुछ नहीं था। मुझे विश्वास है कि हम इन तरीकों से कुछ हासिल नहीं कर सकते। कोई इसे आसानी से हिंदुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन एसोसिएशन के इतिहास से आंक सकता है। हमारी सभी गतिविधियों को एक उद्देश्य के लिए निर्देशित किया गया था, अर्थात्ा अपने सैन्य विंग के रूप में महान आंदोलन के साथ खुद को पहचानना। अगर

www.ignited.in

किसी ने मुझे गलत समझा है, तो उसे अपने विचारों में संशोधन करने दें। मेरा मतलब यह नहीं है कि बम और पिस्तौल बेकार हैं, बल्कि इसके विपरीत हैं। लेकिन मेरा कहने का मतलब यह है कि केवल बम फेंकना न केवल बेकार है, बल्कि कभी-कभी हानिकारक भी है। पार्टी के सैन्य विभाग को हमेशा सभी युद्ध सामग्री तैयार रखनी चाहिए जो किसी भी आपात स्थिति के लिए आदेश दे सकती हैं। उसे पार्टी का राजनीतिक काम वापस करना चाहिए। यह स्वतंत्र रूप से काम नहीं कर सकता है और नहीं करना चाहिए (इबिड। पी। 138)।

विचारधारा: क्रांतिकारी आतंकवादी परंपरा

पहला लेख भगत सिंह ने प्रताप के लिए बब्बर अकाली आंदोलन पर लिखा था। यह 15 मार्च, 1926 को प्रकाशित हुआ था। बब्बर अकाली आंदोलन सिखों द्वारा देश को अंग्रेजों से मुक्त कराने और सशस्त्र विद्रोह द्वारा अपने गुरुद्वारों को भ्रष्ट महंतों से मुक्त करने का एक प्रयास था। यह बिस्ट दोआब तक ही सीमित था और इसकी सदस्यता मुख्य रूप से ग्रामीण थी। इस आंदोलन के नेता मुख्य रूप से ऐसे सैनिक थे जिन्होंने सेना को गैर-सहयोग आंदोलन में शामिल होने के लिए छोड़ दिया था। 1921 में सुंदर सिंह मजीठा, बेदी करतार सिंह, ननकाना के महंत देवदास, सी.एम. बॉरिंग, पुलिस अधीक्षक और सी.एम. किंग, कमिश्नर, जुलंदर। यह 21 फरवरी को ननकाना साहिब में आयोजित महंत नारायणदास द्वारा 140 सिखों के नरसंहार के लिए प्रतिशोध था। बब्बर अकाली समूह हालांकि किसी को भी मारने में सफल नहीं हुआ, लेकिन बॉरिंग की हत्या के प्रयास ने उन्हें जेल में डाल दिया। यह 1921.14 के अकाली षड्यंत्र केस के रूप में जाना जाता है। भगत सिंह इस आंदोलन से बहुत प्रभावित थे, वास्तव में उन्होंने ननकाना साहिब नरसंहार के बाद ही गुरुमुखी सीखना शुरू कर दिया था। लेख में भगत सिंह ने ध्यान से आंदोलन में भाग लेने वाले व्यक्तियों के योगदान को चित्रित किया है। जो चीज उन्हें सबसे ज्यादा प्रभावित करती है, वह है निर्भयता, जिसके साथ ये लोग मौत को गले लगाने के लिए तैयार हैं (छह नेताओं को 27 फरवरी, 1926 को मौत की सजा दी गई थी)। भगत सिंह पाठक से यह कल्पना करने का आग्रह करते हैं कि कैसे इन लोगों ने अपने परिवारों को त्यागने और देश के लिए अपने जीवन का बलिदान देने का संकल्प लिया होगा, श्यह कितना सुंदर, भयावह और शुद्ध दृष्टिकोण रहा होगा। आत्म बलिदान की ऊंचाइयां क्या हैं? साहस और निर्भयता की सीमाएँ कहाँ हैं? क्या उनके आदर्शों के प्रति इस प्रतिबद्धता की कोई सीमा नहीं थी।

अगला लेख मई 1927 में कीर्ति के लिए छद्म नाम विदर्भ के तहत लिखा गया है। 9 अगस्त, 1925 को, रामप्रसाद बिस्मिल, अशफाकउल्ला और हिंदुस्तान रिपब्लिकन एसोसिएशन के अन्य सदस्यों ने (और बाद में लूटा) ट्राम लखनऊ के पास काकोरी में सरकारी खजाने को ले जा रहे थे। 6 अप्रैल, 1927 को मुख्य आरोपियों को मौत की सजा सुनाई गई थी। यह लेख दिलचस्प है क्योंकि इसमें स्पष्ट रूप से उस भयावहता का वर्णन किया गया है जो अभियुक्तों को एक-दूसरे के साथ था और उनकी मौत की सजा सुनकर उन्होंने जो खुशी व्यक्त की थी। यह उन लोगों पर एक टिप्पणी के साथ समाप्त होता है जिनके पास अभियुक्त के लिए कोई सहानुभूति नहीं है, हम सोचते हैं और हमने अपना कर्तव्य निभाया है। हमारे पास वह आग नहीं है, हम पीड़ित नहीं हैं, क्योंकि हम लाश बन गए हैं। आज वे भूख-हड़ताल और पीड़ा पर बैठे हैं और हम चुपचाप तमाशा देख रहे हैं। ईश्वर उन्हें उनके पिछले कुछ दिनों में जिस शक्ति और साहस की आवश्यकता है, उसे प्रदान करे।

अराजकतावाद

लेख यह बताता है कि भगत सिंह अराजकतावाद के प्रति इतने आकर्षित क्यों थे। अराजकतावाद का अंतिम लक्ष्य पूर्ण स्वतंत्रता है, जिसके अनुसार किसी को भी ईश्वर या धर्म के प्रति मोह नहीं होगा, न ही कोई धन या अन्य सांसारिक इच्छाओं के लिए पागल होगा। राज्य द्वारा शरीर पर कोई नियंत्रण या नियंत्रण नहीं होगा। इसका मतलब है कि वे खत्म करना चाहते हैं: चर्च, भगवान और धर्मय राज्य या निजी संपत्ति। अराजकतावादी आंदोलन का एक संक्षिप्त इतिहास है और विधानसभा में बम फेंकने के व्लादिअन के प्रयास के साथ लेख समाप्त होता है। गिरफ्तार होने पर, उन्होंने बोल्ड और स्पष्ट आवाज में कहा, यह बहरे को सुनने के लिए तेज आवाज लेता है ...।

यद्यपि क्रांतिकारियों और अराजकतावादियों के कार्य करने के तरीके में कई समानताएँ दिखाई देती हैं, भगत सिंह ने भारतीय क्रांतिकारी आंदोलन में गुणात्मक परिवर्तन लाया। मार्क्सवाद के पालन का मतलब था कि क्रांतिकारियों ने राज्य के खात्मे के लिए इनकार या लड़ाई नहीं की। राज्य की भूमिका मार्क्सवादी दृष्टि से देखी गई थी। जेल में छोड़ दी गई डायरी भगत सिंह में एंगेल्स के क्लासिक द ओरिजिन ऑफ द फैमिली, प्राइवेट प्रॉपर्टी और स्टेट के कई अर्क हैं। मार्क्स और एंगेल्स के काम का अध्ययन करने के बाद समाज के चरणों, उनके संबंधित पारिवारिक संबंधों और राज्य के मार्क्सवादी सिद्धांत को एक संस्था के रूप में स्पष्ट रूप से समझा जाता है, जो न केवल वर्गों में नए उदय के लिए सदा

www.ignited.in

के चरित्र को उधार देता है, बल्कि गैर-रखने वाली कक्षाओं का शोषण और शासन करने के लिए रखने वाली कक्षाओं के अधिकार के लिए।

मार्क्सवाद

कानपुर आने के बाद भगत सिंह एक क्रांतिकारी बन गए और यह कोई संयोग नहीं है कि कानपुर एक बड़े शहरी सर्वहारा वर्ग के साथ एक महत्वपूर्ण औद्योगिक शहर (सेना द्वारा आवश्यक कपड़े और चमड़े के लेख बनाने के लिए बनाया गया) था। 1926 से, भगत सिंह भी सोहन सिंह जोश और वर्कर्स एंड पीजेंट्स पार्टी के संपर्क में आ गए थे। इसने उनके जीवन में मोड़ को चिह्नित किया।

1926 से जब भगत सिंह ने भारत और दुनिया में क्रांतिकारी आंदोलन के इतिहास का अध्ययन करना शुरू किया, तो उन्होंने व्यापक आधार वाले लोगों के आंदोलन के माध्यम से साम्राज्यवाद से लड़ने की आवश्यकता की सराहना की। लेनिन से उनके उदाहरण (साम्राज्यवाद पर पूंजीवाद का उच्चतम स्तर होने के कारण) और ट्रॉट्स्की द्वारा उनकी जेल नोटबुक में लिखी गई क्रांति पर भी यह प्रतिबिंबित हुआ। कम्युनिस्ट मेनिफेस्टो में, भगत सिंह ने निम्नलिखित पैराग्राफ में कहा, मजदूर वर्ग द्वारा क्रांति में पहला कदम सर्वहारा वर्ग को शासक वर्ग की स्थिति में लाना है, लोकतंत्र की लड़ाई जीतना है, डिग्री के लिए कुश्ती करना है, यह सभी की पूंजी है। पूंजीपति वर्ग से, राज्य के हाथों में उत्पादन के सभी साधनों को केंद्रीकृत करने के लिए, जो कि सर्वहारा वर्ग के शासक वर्ग के रूप में संगठित है, और उत्पादक शक्तियों की कुल संख्या में तेजी से वृद्धि करने के लिए। इसलिए यह स्पष्ट था कि बुर्जुआ क्रांति उस देश में सफल नहीं होगी जहाँ पूँजीवाद ने जनता पर अत्याचार किया था।

समाज में वर्ग दरार के अस्तित्व की धारणा ने यह भी समझा कि सामाजिक संरचना में परिवर्तन लाने के लिए हिंसा अनिवार्य होगी। यह एक हिंसा थी जो निर्माण के लिए नष्ट हो गई।

भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी का गठन 1925-26 में किया गया था और लगभग तुरंत भूमिगत हो गया था। अगले छह वर्षों के भीतर भगत सिंह को मार दिया गया और यह इतिहास के बड़े आयोजनों में से एक बना हुआ है कि क्या वह पार्टी में शामिल हुए होंगे जैसा कि उनके साथी करते हैं।

भारतीय कांग्रेस और अहिंसा:

पंजाब में सबसे प्रमुख कांग्रेसी लाला लाजपत राय थे। वह लाल-बाल-पाल के रूप में जाने जाने वाले अतिवादियों की त्रिमूर्ति का हिस्सा थे। हालांकि, वर्षों के दौरान, लाजपत राय एक बुद्धिमान राजनीतिज्ञ बन गए थे, जो अब राजनीति में बने रहने के बजाय काम करने की इच्छा रखते थे। नवंबर 1927 में, कीर्ति की संपादकीय टीम ने लाला लाजपत राय के लिए एक खुला पत्र निम्नलिखित परिचय के साथ प्रकाशित किया, वे सज्जन जो लाला लाजपत राय के राजनीतिक जीवन से परिचित हैं, वे जानते हैं कि वे केवल नेतृत्व में रुचि रखते हैं और बिना कुछ किए बिना बात कर रहे हैं।.. लालाजी के हालिया व्यवहार से उनकी राजनीति में विश्वास का नुकसान हुआ। अगस्त 1928 में लिखे गए एक अन्य लेख में, लाजपत राय से बयानबाजी की जाती है कि क्या वह अंग्रेजों से लड़ने की इच्छा रखते हैं ताकि देश को भारतीय पूंजीपतियों को सौंप दिया जा सके। क्या हमें तब तक इंतजार करना चाहिए जब तक कि पूंजीपतियों को बाहर करने के लिए हमारे संघर्ष को शुरू करने के लिए हजारों लोग नष्ट या मारे नहीं गए हैं? यह सरासर मूर्खता होगी'। इसी लेख ने लाला लाजपत राय के राजनीतिक ग्रहण की भविष्यवाणी की। लालाजी और उनके जैसे अन्य नेता जो पूंजीपतियों का समर्थन करते हैं, धीरे-धीरे समाप्त हो रहे हैं।

लंबे समय तक समाजवाद 1921-22 से, गांधी कांग्रेस के विचारक बन गए और यह उनके नेतृत्व में था कि पहला गैर-सहकारी आंदोलन शुरू किया गया था। जब गांधी ने आंदोलन को अचानक समाप्त कर दिया, तो क्रांतिकारियों का उनके द्वारा की गई अहिंसा के पंथ से मोहभंग हो गया। 1924-25 के दौरान गांधी हिंसा के उपयोग पर एक विस्तारित राजनीतिक तर्क में शामिल हो गए। गांधी की दलीलों का खामियाजा यह हुआ कि उन्होंने हिंसा को अप्रभावी कहा, इसमें जो खर्च किया गया, उस पर सरकार को अंकुश लगाना पड़ा और गुस्से और बुरे इरादों के दबाव ने इसे पहले स्थान पर ला दिया।

वास्तव में क्रांतिकारियों के प्रति उनका विरोध था कि जब वायसराय लॉर्ड इरविन अपने जीवन में बच गए, तो गांधी ने "कल्ट ऑफ द बम" नामक एक लेख लिखा, जिसमें उन्होंने वायसराय के भागने के लिए ईश्वर को धन्यवाद दिया और उनकी शर्त की निंदा की, क्रांतिकारियों ने 1925 में सचिदानंद सान्याल ने गांधी जी को एक खुला पत्र भेजा, जिसमें उन्होंने कहा, अहिंसक असहयोग आंदोलन असफल नहीं हुआ क्योंकि यहाँ और वहाँ दबी भावनाओं का छिटपुट प्रकोप था, क्योंकि आंदोलन में कमी थी योग्य आदर्श। आपने जो आदर्श प्रचार किया वह भारतीय संस्कृति और परंपराओं के अनुरूप नहीं था। यह नकल का स्वाद था। आपका अहिंसा का दर्शन ... एक निराशा से उत्पन्न दर्शन था। 1929 तक भारत में क्रांतिकारी आंदोलन विकसित हो गया था और उसी साल दिसंबर में, भगवती चरण और चंद्र शेखर आजाद ने गांधी की

तीखी आलोचना से दिल्ली बम मामले के क्रांतिकारियों का बचाव करते हुए एक लेख लिखा था। क्रांतिकारियों का मानना है कि उनके देश का उद्धार क्रांति के माध्यम से होगा... (यह) क्रांति न केवल विदेशी सरकार और उसके समर्थकों और लोगों के बीच सशस्त्र संघर्ष के रूप में व्यक्त करेगी, यह भी एक में प्रवेश करेगी नई सामाजिक व्यवस्था। क्रांति पूंजीवाद और वर्ग भेद और विशेषाधिकारों की मौत की घंटी बजाएगी। यह उन भूखे लाखों लोगों के लिए खुशी और समृद्धि लाएगा, जो विदेशी और भारतीय दोनों तरह के शोषण के भयानक जुए की चपेट में हैं। 1931 में पार्टी को दिए एक नोट में, भगत सिंह ने गांधीवाद के बारे में कांग्रेस में प्रमुख विचारधारा के रूप में लिखा, अंग्रेजों के खिलाफ एक स्टैंड लेने में असमर्थ है और इसके बजाय वह सत्ता में भागीदार बनना चाहता है... (कांग्रेस) एक मध्यमार्गी पार्टी के रूप में काम करना और हमेशा से ऐसा रहा है। यह वास्तविकता का सामना करने के लिए शर्मिंदा है। इसे चलाने वाले नेता वे लोग हैं जिनके हित पार्टी से जुड़े हैं... यदि क्रांतिकारी रक्त इसे जीवन का नयापन देने में सफल नहीं होता है ... तो इसे (पार्टी को) अपने सहयोगियों से बचाना आवश्यक होगा।

संगठन और रणनीति

पहला संगठन भगत सिंह 1924 में हिंदुस्तान रिपब्लिकन एसोसिएशन में शामिल हुआ था। इस संगठन के एक सक्रिय सदस्य के रूप में उन्होंने एक राजनीतिक संगठन के लिए आवश्यक दो चीजें सीखीं। सबसे पहले, समान विचारधारा वाले व्यक्तियों के साथ ऊटपटांग संबंधों को मजबूत करने के लिए ताकि छोटे संगठनात्मक आधार के बावजूद पार्टी सुचारू रूप से कार्य कर सके। दूसरी बात, नोटिस और पर्चे के अलावा एक समाचार पत्र लाने की आवश्यकता, ताकि लोगों को क्रांतिकारियों के विचारों और गतिविधियों के बारे में बताया जा सके।

भगत सिंह ने सोहन सिंह जोश औरंदक वर्कर्स एंड पीजेंट्स पार्टी '(लाहौर में कीर्ति के संपादकीय बोर्ड के सदस्य के रूप में) के साथ काम करना शुरू किया, तो उन्हें पंजाब में एक क्रांतिकारी पार्टी के रूप में कार्य करने वाले संगठन की स्थापना के महत्व का एहसास हुआ। क्रांति के कारण नए लोगों को भर्ती करना। अजोय घोष ने लिखा है कि भगत सिंह पंजाब में सक्रिय थे और उन्होंने और उनके साथियों ने नौजवान भारत सभा का गठन किया था।. हालांकि कोई स्पष्ट रिकॉर्ड नहीं है कि भगत सिंह के साथी कौन थे या उन्होंने वास्तव में इसकी भूमिका में क्या भूमिका निभाई थी। मेरठ षड़यंत्र केस के मुकदमे में, सोहन सिंह जोश ने एक बयान में कहा, मैं उन लोगों में से एक था, जिन्होंने इस संगठन के निर्माण में प्रमुख भूमिका निभाई, मैं स्थानीय नौजवान भारत सभा बनाने के लिए व्याख्यान देने के लिए विभिन्न स्थानों पर गया। उन्होंने सभा को कांग्रेस नेतृत्व के खिलाफ क्षुद्र पूंजीपतियों के विद्रोह के रूप में वर्णित किया। उन्होंने जोरदार तरीके से इनकार किया कि यह एक कम्युनिस्ट पार्टी थी और उन्होंने जोर देकर कहा कि यह मध्यम वर्ग का एक संगठन है जो ब्रिटिश साम्राज्यवाद द्वारा उत्पीड़ित हैं और जो खुद को आर्थिक और राजनीतिक रूप से साम्राज्यवादी जुए से मुक्त करना चाहते हैं। अब्दुल मजीद ने मेरठ षडयंत्र मामले में अपने बयान में कहा है, 1926 में नौजवान भारत सभा कुछ समय के लिए उभरी लेकिन 1928 विवादित समाज बनी रही। 12, 13, 14 अप्रैल, 1928 को इसने अपना पहला सम्मेलन आयोजित किया।

औपनिवेशिक उत्पीड़न की प्रकृति ने कैदियों के अधिकारों का उल्लंघन किया, विशेष रूप से राजनीतिक कैदियों और यहां ब्रिटिश शासन के साथ टकराव का एक और अवसर पैदा हुआ। प्रेस के विकास ने सुनिश्चित किया कि किसी भी टकराव की सूचना जनता को दी जाएगी।

अंत में, अंतिम बलिदान था, मृत्यु एक शक्तिशाली प्रतीक था और यह आशा की जाती थी कि शहादत युवा लोगों को क्रांतिकारी आंदोलन में शामिल होने के लिए प्रेरित करेगी और इसे मुख्यधारा के राष्ट्रीय आंदोलन द्वारा विनियोजित होने से रोकेगी।

मार्च 1928 में, सरकार ने विधान सभा में सार्वजनिक सुरक्षा विधेयक पेश किया। भारतीय सदस्यों ने विधेयक को अस्वीकार कर दिया और 1929 में, वायसराय ने इसे एक अध्यादेश के रूप में पारित करने का प्रयास किया। नौजवान भारत सभा ने इस और व्यापार विवाद विधेयक का विरोध करते हुए प्रस्ताव पारित किए और इसने सीधे हस्तक्षेप करने का निर्णय लिया। 8 अप्रैल, 1929 को, भगत सिंह और बी.के. दत्त ने असेंबली में एक छोटा विस्फोटक फेंका और जब तक वे गिरफ्तार नहीं हुए तब तक वे आगंतुकों की गैलरी में रहे। 7 मई को, भगत सिंह का मुकदमा शुरू हुआ और 6 जून को अदालत में दिए गए बयान में, भगत सिंह और बी.के. दत्त ने एचएसआरए की घोषणा करते हुए कहा, हमने उन लोगों की ओर से अपना विरोध दर्ज कराने के लिए असेंबली चैम्बर के फर्श पर बम गिराया, जिनके पास अपनी दिल दहला देने वाली पीड़ा को अभिव्यक्ति देने के लिए कोई दूसरा साधन नहीं था। हमारा एकमात्र उद्देश्य बधिरों का श्रवण करना और असहाय लोगों को समय पर चेतावनी देना था ... मानवता के समुद्र की प्रतीत होने वाली शांति के तहत, एक सत्यानाश

www.ignited.in

तूफान बाहर निकलने वाला है।. 12 जून को, भगत सिंह थे असेंबली बम मामले में परिवहन की सजा। 15 जून को उन्होंने जेल सुधारों के लिए भूख हड़ताल की। 10 जुलाई, 1929 को लाहौर षड़यंत्र केस की सुनवाई शुरू हुई और 7 अक्टूबर, 1930 को मृत्युदंड के साथ समाप्त हो गया। भगत सिंह, सुखदेव और राजगुरु को 23 मार्च 1931 को फांसी दी गई थी।

गांधीजी के उदारवादी दृष्टिकोण

गांधीवादी विचारधारा महात्मा गांधी द्वारा अपनाई और विकसित की गई उन धार्मिक-सामाजिक विचारों का समूह जो उन्होंने पहली बार वर्ष 1893 से 1914 तक दक्षिण अफ्रीका में तथा उसके बाद फिर भारत में अपनाई थी। गांधीवादी दर्शन न केवल राजनीतिक, नैतिक और धार्मिक है, बल्कि पारंपरिक और आधुनिक तथा सरल एवं जटिल भी है। यह कई पश्चिमी प्रभावों का प्रतीक है, जिनको गांधीजी ने उजागर किया था, लेकिन यह प्राचीन भारतीय संस्कृति में निहित है तथा सार्वभौमिक नैतिक और धार्मिक सिद्धांतों का पालन करता है।

उदार विचारधारा इस धारणा पर आधारित थी कि द मॉडेम यूरोपीय सभ्यता की उच्चतम अभिव्यक्ति थी मानव जाति की प्रतिभा और भारत को केवल सभ्य बनाया जा सकता है अंग्रेजों के मार्गदर्शन और देखरेख में। चरमपंथी दावा किया है कि राष्ट्रीय आत्मनिर्णय एक दैवीय अधिकार है लेकिन उसी समय ने मॉडेम यूरोपीय की प्रगतिशील भूमिका को मान्यता दी सभ्यता और के बीच एक संश्लेषण लाने की मांग की पूर्व की आध्यात्मिक संस्कृति और पश्चिम की भौतिक संस्कृति।

महात्मा गांधी ने पूर्ण रूप से निरसन के साथ शुरुआत की मॉडेम सभ्यता। उन्होंने जोर देकर कहा कि यह निहित है वास्तव में मूल्यवान कुछ भी, और उस पर एक ललाट हमला दिया। उसे विदेशी वर्चस्व के खिलाफ संघर्ष अनिवार्य रूप से एक था मॉडेम सभ्यता के खिलाफ संघर्ष। उन्होंने धार्मिक दृष्टि से शुरुआत की लक्ष्यों और आदर्शों और उन्हें हासिल करने के लिए राजनीति को एक साधन के रूप में इस्तेमाल किया।

गाँधीजी सिद्धान्त निर्माता नही थे, पर फिर भी उनके सिद्धान्त थे। उनके समकालीन, राजनीतिक, आर्थिक व सामाजिक मुद्दों पर विचार सहजता से अभिव्यक्त हुए, जहाँ व्यक्तियों को सामुदायिकता से अधिक महत्व था। राज्य व समाज के सामुहिकता के सिद्धान्त को नकारते हुए गाँधी का तर्क था कि व्यक्ति ही चेतना का अतः भौतिकता का भी प्रयोग कर सकता है। गाँधी ने व्यक्तिगत स्वायत्ता का ऐसा सिद्धान्त दिया जहाँ व्यक्ति अपनी परम्पराओं और समुदाय के अन्तर्गत सशक्त होता है। व्यक्तियों को सारूप करके और उनकी भिन्नता की उपेक्षा करके, आधुनिकता के अंतर्गत परिभाषित पश्चिमी तर्कवाद ने राज-आर्थिकी व सांस्कृतिक जड़ों के कारण मानव के विविधतपूर्ण स्वभाव की उपेक्षा की है। गाँधी ने आधुनिकता के हमारे अवधारणीकरण की कुछ कमियों को पूरा किया है। ऐसा उन्होंने समकालीन प्रचलनों तथा संस्थाओं मे सत्तत रूप से नैतिकता लागू मूल्यांकित करने की आधुनिक प्रकृति उन्हें साधन मात्र बना देती है।

अहिंसा

अहिंसा का अर्थ होता है प्रेम और उदारता की पराकाष्ठा। गांधी जी के अनुसार अहिंसक व्यक्ति किसी दूसरे को कभी भी मानसिक व शारीरिक पीड़ा नहीं पहुँचाता है।

स्वदेशी आंदोलन

गाँधी से विचार-विमर्श करते हुए गुरूदेव ने कहा कि देश के नागरिकों को इससे कोई अंतर नहीं पड़ता कि उनका शोषण भारतीय पूंजीपति कर रहे हैं या विदेशी पूंजीपति, इस पर महात्मा गांधी ने कहा कि स्वदेशी पूंजीपति के वृक्ष के फल इस धरती पर गिरते हैं। इन पूंजीपतियों द्वारा स्वदेशी श्रमिकों को रोजगार मुहैया होगा वहीं विदेशी पूंजीपति हमारी पूंजी लूट-खसोट कर ले जाएंगे। यही स्थिति आज प्रतीत होती है। अतः इससे बचने के लिए आवश्यक है कि हम गाँधी द्वारा दिखाए मार्ग स्वदेशी को चुने। साथ ही वैश्वीकृत भौतिकवादी युग में बढ़ती लालसाओं, तृष्णा एवं भूख से उत्पन्न समस्याओं के निराकरण हेतु गाँधी के अपरिग्रह तथा मानवीय मूल्यों को बढ़ावा देने हेतु सत्य, अहिंसा, ब्रह्मचर्य जैसे कार्यक्रमों एवं विधियों को स्वीकार कर भावी पीढ़ी को संयमी, संतोषी तथा संतुलित बनाया जा सकता है।

भारत गाँवों का देश है। अतः भारत का विकास गाँवों के विकास से ही संभव हो सकता है। इसलिए आवश्यकता है राज्य एवं अर्थनीति के बीच उस तालमेल की जो गाँधी द्वारा प्रतिस्थापित प्रतिमान से मेल खाती हो। गाँधी का मानना था कि पूंजी का एकत्रीकरण कुछ मुट्ठीभर लोगों के हाथ में नहीं होना चाहिए वरन् पूंजी का वितरण ऐसा होना चाहिए कि इस विशाल देश को बनाने वाले 70 प्रतिशत लोगों को पूंजी आसानी से प्राप्त हो। अतः राज्य की भूमिका अर्थ के उत्पादन, वितरण में होनी चाहिए। जो वैश्वीकृत युग जिसमें राज्य की भूमिका गौण होती जा रही है में नयी स्थिति को स्वीकार करता है। निष्कर्षतः राज्य एवं अर्थतंत्र के बीच संतुलन, स्वदेशी एवं विदेश के बीच स्व की प्रभुता तथा भौतिकवाद एवं आदर्श के बीच समन्वय की आवश्यकता है। इस हेतु प्रस्तुत अध्ययन महत्वपूर्ण साबित होगा।

गाँधी का आर्थिक दर्शन राजव्यवस्था का आधार

गाँधीजी ने राज-आर्थिकी दर्शन को नैतिक आधारशिला सी प्रदान की उन्होनें कहा कि "सच्चा अर्थशास्त्र कभी भी उच्चतम नैतिक मापदण्ड के विरूद्ध नहीं जा सकता। अर्थशास्त्र को न्याय भावना से परिपूर्ण होना चाहिए। ऐसा अर्थशास्त्र जो व्यक्ति अथवा राष्ट्रों के नैतिक कल्याण पर आघात करता है अनैतिक है और इसलिए पापपूर्ण है। मनुष्य अपने लिए भौतिक लाभ की आशा से ही कर्म करने को प्रेरित हो। इस प्रकार का विचार पतन की ओर ले जाने वाला है। मनुष्य एक इंजन है जिसकी संचालक शक्ति आत्मा है।

यह विलक्षण सी बात है कि इंजन धन के प्रलोभन से अथवा दबाव में आकर अधिकतम कार्य नहीं कर सकता। अधिकतम कार्य तो तभी किया जायेगा जब संचालक शक्ति अर्थात मनोबल या आत्मा को प्रेमरूपी ईंधन देकर सबसे अधिक शक्तिशाली बना दिया जायेगा। गाँधी जी कहा है कि मनुष्य अपने नौकर से जितना काम प्रेमपूर्ण व्यवहार से ले सकता है उतना आर्थिक प्रलोभन या दबाव से नहीं। हमारा उद्देश्य एक ऐसी न्यायपुर्ण सामाजिक व्यवस्था की स्थापना करना है जो यह सोचे कि दूसरों के प्रति उसके क्या कर्तव्य है। गाँधी के अनुसार स्वतन्त्र प्रतिस्पर्धी सिद्धान्त में धनी लोग निर्धनों का शोषण करके अनापशनाप धन कमा लेते हैं और मालिक तथा नौकर के सम्बन्ध दिन-प्रतिदिन बिगड़ते चले जाते है। गाँधी जी ने पूर्ण विश्वास प्रकट करते हुए कहा कि यदि अर्थशास्त्र को नैतिक आधार पर प्रतिष्ठित कर दिया जाये और लाभ की इच्छा के स्थान पर न्याय-भावना को प्रोत्साहन दिया जाय तो आधुनिक आर्थिक युग के अनेक गम्भीर दोष समाप्त हो जायेंगे।

गांधी और महिला सशक्तिकरण

स्त्री की मुक्ति, जैसा कि गांधी ने देखा था, वह एक गहरे बैठे द्वेष से जुड़ा था। डॉ एस मुथुलक्ष्मी रेड्डी ने 1929 तक महात्मा गांधी को एक लंबा पत्र लिखा था, जिसमें उन्होंने सामाजिक सुधार से संबंधित कुछ बुनियादी मुद्दों को उठाया था। उन्होंने उनसे यह भी सवाल किया कि क्यों कांग्रेस, जो हर देश और व्यक्ति की स्वतंत्रता के लिए लड़ रही थी, को पहले अपनी महिलाओं को उन बुरे रिवाजों और रूढ़ियों से मुक्त नहीं करना चाहिए जिन्होंने उनके स्वस्थ सर्वांगीण विकास को प्रतिबंधित किया। वह इसे सामाजिक अत्याचार का एक विशिष्ट उदाहरण मानती थीं। भारतीय महिलाओं ने, कुछ अपवादों के साथ, शक्ति और साहस की भावना को खो दिया है, स्वतंत्र सोच और पहल की शक्ति जिसने प्राचीन भारत की महिलाओं को अभिनय किया, जैसे मैत्रेयी, गार्गी, सावित्री और आज भी बड़ी संख्या में हमारी अपनी महिलाओं को सक्रिय करती हैं। ब्रह्म समाज, आर्य समाज, थियोसोफी जैसे उदार पंथों से संबंधित, जो केवल हिंदू धर्म है, जो अपने सभी अर्थहीन रीति-रिवाजों, संस्कारों और कर्मकांडों से मुक्त हो गया है? यद्यपि गांधी उसके साथ एक पूर्ण रूप से सहमत थे, फिर भी वह उस समय सीधे सामाजिक और धार्मिक रीति-रिवाजों के मुद्दों से निपटने के लिए तैयार नहीं थे और अपनी प्रतिक्रिया इस प्रकार केंद्रित करते थे, पुरुष निस्संदेह अपनी उपेक्षा के लिए दोषी हैं, उनके बीमार होने पर महिलाओं का उपयोग, और उन्हें पर्याप्त तपस्या करनी है, लेकिन जिन महिलाओं ने अंधविश्वास को खत्म कर दिया है और गलत के प्रति सचेत हो गई हैं, उन्हें सुधार का रचनात्मक काम करना होगा। महिलाओं की मुक्ति, भारत की मुक्ति, अस्पृश्यता को दूर करने का प्रश्न। आम जनता की आर्थिक स्थिति और इस तरह के सुधार, गांवों में प्रवेश, पुनर्निर्माण या बल्कि गांव के जीवन के पुनर्निर्माण से हल होते हैं। समाज के विभिन्न बंधनों से मुक्ति का एक लक्ष्य प्राप्त करने के लिए उनका मानना था कि गांवों में शुरू होने वाले कुल परिवर्तन के लिए काम करना था।

स्वर्गीय कमलादेवी चट्टोपाध्याय, एक प्रसिद्ध स्वतंत्रता सेनानी, राजनीतिक और सामाजिक कार्यकर्ता, एक प्रभावी रचनात्मक कार्यकर्ता, और भारत के सांस्कृतिक पुनर्जागरण के प्रेरक ने कहा कि जबकि स्वतंत्रता आंदोलन में महिलाओं की प्रगतिशील स्थिति पुरुष समाज सुधारकों और गांधी द्वारा तेजी से प्रेरित थी। वास्तव में महिलाओं की वकालत थी जिसने गांधी सहित कई पुरुष नेताओं को प्रभावित किया।

गांधीजी के शैक्षिक विचारो की प्रांसगिकता

गाँधी के जीवन, कृतित्व और विचारधारा पर और आज के युग में उनकी सार्थकता पर जितना भी अध्ययन चिंतन एवं विचार विनिमय हुआ वह एक विचार तथा कार्यक्रम को लेकर हुआ। समग्र अध्ययन तथा वैश्वीकृत युग में राजनीति और आर्थिकी के सहसंबंधों पर आधारित नहीं हुए हैं। अतः प्रस्तुत अध्ययन राजनीतिविज्ञान एवं अर्थशास्त्र से जुड़ा होने पर अंर्तविषयी दृष्टिकोण के आधार पर भी वर्तमान में महत्वपूर्ण है। गाँधी के प्रिय विषय थे साम्प्रदायिक सद्भाव, राष्ट्रीय एकता, ग्राम विकास, शिक्षा, लघु उद्योग हस्तशिल्प, खादी, प्राकृतिक चिकित्सा, कृषि विकास, नशाबंदी, राष्ट्र भाषा के रूप में हिन्दी तथा विशिष्ट अर्थनीति आदि। संस्कृति, शिक्षा, धर्म, दर्शन, अध्यात्म, राजनीति, आर्थिक नीति, सामाजिक सुधार, स्वास्थ्य तथा चिकित्सा जैसे क्षेत्रों में उन्होंने अपनी

www.ignited.in

भारी छाप छोड़ी है। यही कारण है कि देश में भी और देश से बाहर विश्व भर में उनका प्रभाव बहुत और गहरा रहा है।

अहिंसावादी पुरुष

महात्मा गाँधी ने राजनीति, समाज, अर्थ एवं धर्म के सत्र में आदर्श स्थापित किये व् उसी के अनुरूप लक्ष्य प्राप्ति के लिए स्वयं को समर्पित ही नहीं किया बल्कि देश की जनता को प्रेरित किया व आशानुरूप परिणाम भी प्राप्त किये। उनकी जीवन दृष्टि भारत ही नहीं सपूर्ण विश्व के कल्याण का मार्ग प्रशस्त करती है। आज गाँधी हमारे बीच नहीं हैं। किन्तु एक प्रेरणा और प्रकाश के रूप में लगभग उन् सभी मुददो पर उनका मार्गदर्शन निरंतर हमारे साथ है जिसका सामना किसी व्यक्ति, समाज या राष्ट्र को करना पड़ता है। इक्कीसवीं सदी में गाँधी की सार्थकता प्रत्येक क्षेत्र में है। इस अहिंसावादी पुरुष के सिद्धांतों के महत्व को समझकर ही संयुक्त राष्ट्र ने अक्टूबर २ को विश्व अहिंसा दिवस के रूप में मनाने की घोषणा की है।

उद्देश्य

1. प्रस्तुत अध्ययन में भगत सिंह की क्रांतिकारी राजनीति और गांधीजी के उदारवादी दृष्टिकोण का तुलनात्मक अध्ययन किया गया है।

2. प्रस्तुत अध्ययन में गाँधी जी के शैक्षिक विचारो की प्रांसगिकता और भगत सिंह की क्रांतिकारी राजनीति को विश्लेषण किया गया।

निष्कर्ष

क्रांतिकारियों ने देश की स्वतंत्रता की दिशा में अपने तरीके से बहुत योगदान दिया। यद्यपि वे जनता के दिलों में गहराई से प्रवेश नहीं कर सके, वे निश्चित रूप से उनमें देशभक्ति की भावना और विदेशियों को अपनी मिट्टी से बाहर निकालने का दृढ़ संकल्प था। इस भावना ने ब्रिटिश नौकरशाहों को चिंतित कर दिया। यहां तक कि जो लोग उनकी विचारधारा और तरीकों के विरोध में थे, उन्होंने मातृभूमि के अपने प्यार और वीर तरीके के लिए उनकी प्रशंसा की, जिसमें उन्हें फांसी और जेलों में बेहद कठिन जीवन का सामना करना पड़ा। हिंसा के अपने पंथ की निंदा करते हुए, यहां तक कि अहिंसा के एक महात्मा गांधी ने भी, देशभक्ति की तीव्र भावनाओं की उनकी भावनाओं की सराहना की और विदेशी मजाक से अपने देश की मुक्ति के लिए अपने सभी को बलिदान करने की इच्छा व्यक्त की। उन शहीदों में से जिन्होंने स्वेच्छा से कांटेदार रास्ते का सहारा लिया और भाग्य के साथ फांसी का सामना किया, भगत सिंह का नाम एक सितारे के रूप में चमकता है। उन्हें सही मायनों में शहीदों का राजकुमार कहा जाता है। यह याद रखना होगा कि गांधी स्वयं भारत के वायसराय नहीं थे। उनकी ओर से वाइसराय, ब्रिटिश सरकार का सिर्फ एक भुगतान किया गया कर्मचारी था, जो इंग्लैंड में अपने आकाओं के निर्देशों के तहत काम करता था, जो क्रांतिकारियों को दबाने पर आमादा थे। यदि क्रांतिकारियों का संबंध सामान्य होता, और भगत सिंह, सुखदेव और राजगुरु की तरह नहीं होते, तो यह आसान होता।इस मामले में गांधी की भूमिका को इस तथ्य के मद्देनजर आंका गया है कि उन्होंने जिस अंतिम लक्ष्य के लिए काम किया, वह देश की आजादी के लिए था जहां एक नहीं बल्कि कई भगत सिंह को आजादी के लिए बलिदान देने की आवश्यकता थी।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. के0 एम0 मुन्शी, दि मास्टर, पे0 27

2. के0 एम0 पानीक्कर, दि फाउन्डेशन आफ न्यू इण्डिया, पे० 179-180 ।

3. मजूमदार, हिस्ट्री आफ फ्रीडम मूवमेंट इन इण्डिया, भाग दो, पे० 62 ।

4. पोलक, एच0 एस0 महात्मा गाँधी, पृ0 153 ।

5. यंग इण्डिया, 29 मई, 1920 ।

6. सईद, एम0 एच0 जिन्ना, पृ0 305 ।

7. जगमोहन सिंह और चमन लाल एड।, व्च। सीआईटी।

8. एस.के. मित्तल और इरफान हबीब, श्द कांग्रेस एंड द रिवोल्यूशनरीज इन 1920श्, सोशल साइंटिस्ट, वॉल्यूम। 10, नंबर 6, जून, 1982।

9. अजॉय घोष, ऑप। सीआईटी।

10. कमलेश मोहन, ओपी सीआईटी। कमलेश मोहन का मानना है कि नौजवान भारत सभा का आयोजन भगत सिंह, सुखदेव, भगवती चरण और कामरेड रामकिशन, पी के सामूहिक प्रयासों से किया गया था। 80।

11. जी। आदिकारी एड।, श्भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी के इतिहास के दस्तावेजश्, वॉल्यूम। प्प्ब्, 1928, नई दिल्ली, 1982।

www.ignited.in

12. भगत सिंह के कथन का पाठ और बी.के. दत्त असेंबली बम केस में जी.एस. देओल, शहीद-ए-आजम, भगत सिंह में दिखाई दिए। पटियाला, 1978।

Corresponding Author

Dr. Sneha Pandey*

Ph.D. Scholar